पूजापूर्व व्यक्तिगत व्यवस्था

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।)

१. देवतापूजनकी व्यवस्थाका क्रम २३

२. पूजापूर्व करने योग्य व्यक्तिगत व्यवस्थाका महत्त्व

२ अ. एवं २ आ. सात्त्विकता बढना एवं हिन्दू संस्कृतिको संजोना २४

३. पूजापूर्व करने योग्य व्यक्तिगत व्यवस्था (केवल कृति) २४

* स्नान, वस्त्रधारण, केशरचना, अलंकारधारण, आचमन, प्राणायाम, तिलकधारण व पूजा के समय करनेयोग्य कुछ कृति २५

४. पूजापूर्व करने योग्य व्यक्तिगत सिद्धताका अध्यात्मशास्त्रीय आधार २९

४ अ. स्नान : स्नानके उपरांत शीघ्र पूजा आरंभ करें २९

४ आ. पूजाके समय धारण किए जानेवाले वस्त्रोंका स्वरूप एवं उनका माहात्म्य ३१

४ इ. पुरुषोंद्वारा पहनने योग्य वस्त्र ३७

४ ई. स्त्री एवं पुरुषोंद्वारा धारण करने योग्य वस्त्र ४३

* पूजा करते समय स्त्रियोंको नौ गजकी साडी एवं पुरुषोंको धोती पहनना अथवा उपरना क्यों लेना चाहिए ? ४३

* देवतापूजनके लिए बैठते समय उपरना क्यों लें ? वह रेशमका क्यों होना चाहिए ? ४७

* पूजाविधि अथवा अन्य धार्मिक अवसरपर पुरुष बाएं कंधेपर ही उपरना क्यों लें ? ५१

* प्रदक्षिणा करते समय, नमस्कार, पूजा, हवन एवं जप करते समय तथा गुरु एवं देवताके दर्शन करते समय गलेमें वस्त्र न लपेटनेका क्या कारण है ? ५४

* पुरुषों एवं स्त्रियोंके सिर ढकनेका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ५७

* पुरुष चपटी एवं दोनों ओरसे नुकीली (नोकदार) एवं गहरे रंगकी टोपी क्यों पहनें ? ५९

* यजमान पुरुष, स्त्री तथा पुरोहित, इनके द्वारा पहनने योग्य वस्त्रोंके रंग कौनसे होने चाहिए ? ६३

४ उ. स्त्री एवं पुरुषोंकी केशरचना ६५

४ उ १. पुरुषोंके लिए शिखा रखनेका महत्त्व क्या है ? ६५

४ उ २. स्त्रियोंद्वारा जूडा बनाए जाने का महत्त्व क्या है ? ६६

४ ऊ. पूजाविधिके समय स्त्रीद्वारा संपूर्ण शरीरपर और पुरुषोंद्वारा केवल गलेमें हार और उंगलीमें अंगूठी पहनना आवश्यक ६७

४ ए. स्नानोपरांत प्राणायाम क्यों करें ? ६७

४ ऐ. पूजकद्वारा तिलक अथवा भस्म धारण किया जाना ७0

* पूजा आरंभ करनेसे पूर्व स्वयंको कुमकुमका तिलक क्यों लगाएं ? ७२

* हिन्दू धर्ममें काला रंग निषिद्ध माना जानेपर भी बुक्केका तिलक क्यों लगाते हैं ? ८४

* भस्म सदा आडे क्यों लगाते हैं; खडा क्यों नहीं ? ८७

* हलदी, कुमकुम, सिंदूर, बुक्का एवं गंध स्वयंको और अन्योंको विशिष्ट स्थानपर ही क्यों लगाएं ? ९१

५. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए मात्र देवतापूजन नहीं; अपितु उसके अगले चरणकी साधना करना आवश्यक ९८

६. देवताओंका अनादर रोकना, कालानुसार आवश्यक उपासना है ! ९८

भूमिका

हमारे सनातन हिन्दू धर्मकी एक अद्वितीय विशेषता है, मनुष्यजीवनके प्रत्येक क्रियाकलापके माध्यमसे यथासाध्य चैतन्य-ग्रहणका धर्मद्वारा किया गया गहन विचार । हिन्दू धर्म अंतर्गत जन्मसे मृत्युतकके विविध संस्कार,धार्मिक कृत्य, मृत्योत्तर श्राद्धादि विधि इत्यादि ईश्वरप्राप्ति हेतु पूरक हैं,तथापि देवतापूजन, यज्ञयागादि उपासनापद्धतियां प्रत्यक्ष ईश्वरप्राप्ति करवाती हैं । घर-घरमें नित्य आचरणमें लाई जानेवाली एक सरल उपासनापद्धति है 'देवतापूजन' । ईश्वरीय चैतन्य ग्रहण होनेमें देवतापूजन सहायक है । यहां ध्यानमें रखने योग्य एक महत्त्वपूर्ण सूत्र यह है कि पूजाके पूर्व पूजककी सात्त्विकता जितनी बढती है, उतनी ही उससे पूजा मनसे और भावपूर्वक होकर वह पूजाद्वारा ईश्वरीय चैतन्य ग्रहण करनेमें अधिक सक्षम बनता है । पूजककी सात्त्विकता बढानेमें लाभदायक है उसकी व्यक्तिगत व्यवस्था (तैयारी) !

देवतापूजनके लिए पुरुष शर्ट-पैंटकी (कमीज-पतलूनकी) अपेक्षा कुर्ता-धोती-गमछा एवं स्त्री छः की अपेक्षा नौ गजकी साडी क्यों धारण करे, पूजक गहरे रंगके वस्त्र क्यों न पहने ?, पुरुष बाएं कंधेपर गमछा क्यों ले, स्त्री सिरपर आंचल क्यों ले, ऐसे अनेक प्रश्नोंके अध्यात्मशास्त्रीय उत्तर इस ग्रंथसे समझ लेनेपर, पूजककी पूजाके लिए व्यक्तिगत व्यवस्थाका (तैयारीका) महत्त्व ध्यानमें आता है । किसी कृत्यके महत्त्वपर ध्यान देनेपर,वह कृत्य श्रद्धासे होता है एवं ऐसे श्रद्धायुक्त कृत्यका फल अधिक मिलता है । अनेक लोगोंको पूजापूर्व कुमकुम, गंध, सिंदूर, भस्म जैसे घटक लगाने के विषयमें जानकारी होती है; किंतु उसे निश्चितरूपसे किस स्थानपर एवं किस पद्धतिसे लगाना चाहिए, इसकी बहुधा जानकारी नहीं होती । इस संदर्भमें भी प्रस्तुत ग्रंथमें शास्त्रीय कारणोंके साथ मार्गदर्शन किया गया है ।

अध्यात्ममें एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है – ‘जहां भाव, वहां भगवान’।देवता–पूजनपूर्व व्यवस्था एवं प्रत्यक्ष देवतापूजनके कारण पूजकमें भक्तिभाव निर्मित होनेमें सहायता मिलती है । मोती पूर्णरूपसे विकसित होनेतक सीपीका बहुत महत्त्व रहता है एवं मोती प्राप्त हो जानेपर सीपीका महत्त्व समाप्त हो जाता है । इसी प्रकार एक बार भाव निर्मित हो जाए अथवा आध्यात्मिक स्तर बढ जाए, तो पूजा अंतर्गत कर्मकांडोंका अक्षरशः आचरण करनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती । उसके अगले स्तरपर,देवतापूजन करनेकी भी आवश्यकता नहीं रहती; क्योंकि ऐसे साधकका मन सदा ईश्वरके आंतरिक सान्निध्यमें ही रहता है; परंतु ऐसी स्थिति प्राप्त होनेतक धर्मपालनका एक महत्त्वपूर्ण अंग समझकर देवतापूजनपूर्व व्यवस्था एवं प्रत्यक्ष देवतापूजनकी ओर ध्यान देना चाहिए ।

इस ग्रंथको पढनेसे पूजककी व्यक्तिगत व्यवस्थाका (तैयारीका) महत्त्व समझकर उसके अनुसार पूजकद्वारा आचरण हो एवं उसे अधिकाधिक ईश्वरीय चैतन्यका लाभ हो, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**